Review Of Research
Vol. 3 | Issue.6 | March.2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

आदिकाल : आदिकलीन वीरगाथा साहित्य की विशेषताएँ।

डॉ. कांबळे अर्चना शिवाजीराव
सहाय्यक प्राध्यापक, श्री शिवाजी महाविद्यलाय, बार्शी जि. सोलापूर.

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य का आदिकाल जिसे विरगाथाकाल, चारणकाल जैसे नामों से अभिहित किया जाता है। इस विरगाथाकाल का काल सं. 1050 से सं. 1375 तक माना गया है। राजस्थान में चारण कवियोंद्वारा अनेक चरित काव्यों का निर्माण किया गया है। चरित काव्य का प्रधान विषय विरगाथा से संबंधित है। इन काव्यों को विरगाथा काव्य कहा जाता है, इसी आदिकालीन विरगाथा साहित्य की विशेषताएँ निम्नलिखित है।

आदिकालीन विरगाथा साहित्य की विशेषताएँ :

१. संदिग्धता
२. ऐतिहासिकता का अभाव
३. युद्धो के सर्जाव वर्णन
४. वीर और शृंगार रस
५. सकुचित राष्ट्रीयता
६. प्रकृति चित्रण
७. काव्य के रुप
८. छंद प्रयोग
९. डिंगल और पिंगल भाषा
१०. जनजीवन से संपर्क नहीं

१. संदिग्धता

आदिकाल में मिलनेवाली प्राय:अनेक विरगाथाओं की प्रामाणिकता संदेहयुक्त है, अर्थात इनके बारे में याने रचनाकाल, रचायेता, और वर्णित विषय आदि के बारे में निश्चित रुप से कुछ कहा नहीं जा सकता। विभिन्न रासों ग्रंथों में शताब्दियों तक अनेक परिवर्तन होते गए है। फान्त: इनमे ज्यादा तर संदिग्धता आयी है।

२. ऐतिहासिकता का अभाव

आदिकालीन रासों को इतिहास की कसोटी पर कसेगें तो बहुत से ग्रंथ नहीं उतरते। अर्थात इनमें ऐतिहासिकता का अभाव ही अभाव रहा है।

३. युद्धो के सर्जाव वर्णन

आदिकालीन चारण कवियों ने अपने रासो ग्रंथो में अपने राजाओं कि विरता, शौर्य, पराक्रम सिद्ध करने के लिए यहाँ-वहाँ युद्धों के सजीव और जीवंत वर्णन मिलते हैं।

४. वीर और शृंगार रस

शृंगार का अद्भूत संमिश्रण मिलता है।

५. सकुचित राष्ट्रीयता

अपन आश्रयदाताओं कि मुक्तकंठ से प्रशंसा करनेवाले आदिकालीन कवियों के पास व्यापक राष्ट्रीयता का पूरा अभाव था। इनमें वैयक्तिकता का प्रभाव और संकुचित राष्ट्रीयता की भावना थी।

६. प्रकृति चित्रण

आदिकालीन साहित्य में प्रकृति का आलंबन और उद्दीपन दोनों रुपों में चित्रण मिलता है। नगर, नदी, पर्वत आदि का वस्तु वर्णन भी बहुत सुंदर किया है।

७. काव्य के रुप

आदिकालीन वीरगाथाएँ प्रायः प्रबंधनात्मक रुप में पायी जाती है। कहीं-कहीं मुक्तक शैली का भी अवलंब किया है।

८. छंद प्रयोग

आदिकालीन ग्रंथों में अनेक छंदो का प्रयोग मिलता है। दोहा, त्रोटक, तोमर, आर्या, रोला, कुंडलिया, कवित्त, गाथा सट्टक आदि अनेक छंदो का प्रयोग अत्यंत कलात्मकता से कि किया हुआ मिलता है।

९. डिंगल और पिंगल भाषा

आदिकलिन रासों ग्रंथो कि उल्लेखनीय विशेषता यह है कि उनमें डिंगल भाषा का सर्वाधिक प्रयोग पाया जाता है। डिंगल भाषा का अर्थ- ''साहित्यिक राजस्थानी भाषा'' और पिंगल भाषा का अर्थ- '' अपभ्रंश मिश्रित साहित्यिक ब्रजभाषा।''

१०. जनजीवन से संपर्क नहीं

आदिकाल में चारण कवियों ने अपने-अपने आश्रयदाताओं की ही स्तुती करना ही काव्यनिर्मिती का संकुचित हेतु अपनाया था। अर्थात इन्होंने जनजीवन से सीधा संपर्क स्थापित नहीं किया।